ईश्वर सबसे बड़ा न्यायकर्त्ता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

वैदिक संस्कृति का सम्पूर्ण तानाबाना ईश्वर को केन्द्र में रखकर बुना गया है। ईश्वर सब कुछ करने वाला है उसकी मर्जी के बिना संसार का एक पता भी नहीं हिलता। मानव की अदालत में गलती होने की सम्भावना हो सकती है, किन्तु ईश्वर की अदालत में कोई गलती नहीं होती। वह अन्तिम न्यायकर्त्ता है। मानव को कर्मों के अनुसार पुरस्कार और दण्ड स्वयं मिलता रहता है। ईश्वर की दृष्टि में कोई न छोटा है न कोई बड़ा। उसकी दृष्टि में सभी समान हैं। ईश्वर की अदालत में पक्षपात नहीं होता। मानव की अदालत में पक्षपात होने की सम्भावना रहती है क्योंकि वहां मनुष्यों के द्वारा न्याय किया जाता है। न्यायाधीश को जैसा उचित लगता है वह वैसा ही फैसला सुना देता है। ईश्वर के अदालत में सभी समान हैं। वह सबसे बड़ी अदालत है। उसके न्याय के बाद सभी दरवाजे बन्द हो जाते हैं। मनुष्य को ऐसा लगता है कि ईश्वर ने मेरे साथ अन्याय किया। किन्तु ऐसा नहीं होता। कर्मों का लेखा जोखा ईश्वर के पास सुरक्षित रहता है। समय आने पर सबको उसका परिणाम मिलता है। जिसने जैसा बीज बोया है उसे वैसा ही परिणाम मिलेगा। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि कर्म करना मनुष्य के अधिकार में है। फल प्राप्त करना मनुष्य के हाथ में नहीं है। अतः निष्काम भावना से कर्म करना चाहिए।

जिस व्यक्ति की सहायता ईश्वर करता है, उसको कोई नहीं मार सकता। चाहे पूरा संसार ही उसके विरुद्ध हो जाय फिर भी उस व्यक्ति का बाल भी बांका नहीं हो सकता। सूक्ति रूप में कहां जाये तो इसको इस रूप में कहा जा सकता है–

जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय,

बाल न बांका कर सके जो जग बैरी होय।

कोई भी व्यक्ति कर्मों से बड़ा या छोटा होता है। यदि वह अच्छा कर्म करता है, सदाचार पूर्वक व्यवहार करता है, ईश्वर पर विश्वास करता है तो निश्चित ही ईश्वर भी ऐसे व्यक्ति की

सहायता करता है। किन्तु जो व्यक्ति आलसी है, दूसरों के सहारे जीवन यापन करने की परिकल्पना करता है, नास्तिक है, उसकी सहायता कोई नहीं कर सकता। ईश्वर पर आस्था रखने का अर्थ है सकारात्मक दृष्टिकोण रखना और ईश्वर पर आस्था न रखने का मतलब है निषेधात्मक दृष्टिकोण रखना। जो व्यक्ति सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है हर वस्तु को विधेयात्मक दृष्टि से देखता है, वह किसी के साथ बैरभाव नहीं रखता है। जो व्यक्ति अपनी आत्मा के समान अन्य लागों को देखता है ऐसे व्यक्ति के लिए सम्पूर्ण पृथ्वी एक कुटुम्ब के समान होती है। उसके लिए न तो कोई छोटा होता है न तो बड़ा। हर जगह वह समानता का दर्शन करता है। दुर्घटना के समय कुछ आदमी बच जाते हैं और कुछ की मृत्यु हो जाती है तो प्रायः लोग यही कहते हैं कि जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय। इस संबंध में भक्त प्रह्लाद का उदाहरण द्रष्टव्य है। प्रह्लाद के पिता हिरणाकश्यप बहुत घमंडी और अहंकारी था। वह ईश्वर में विश्वास नहीं करता था। स्वयं को ही ईश्वर मानता था। किन्तु प्रह्लाद ईश्वर का भक्त था और अपने पिता को ईश्वर नहीं मानता था। इससे उसके पिता बहुत नाराज हुए और प्रह्लाद को जान से मारने के लिए अनेक षड्यंत्र रचे। किन्तु प्रह्लाद की रक्षा तो स्वयं ईश्वर कर रहे थे। इसलिए हिरणाकश्यप के द्वारा रचा गया सम्पूर्ण षडयंत्र विफल हो गया और प्रह्लाद का बाल भी बांका नहीं हुआ। इस दृष्टांत से ईश्वर के अस्तित्व का पता चलता है। सैंकड़ों प्रयत्न के बावजुद भी हिरणाकश्यप प्रह्लाद को न मार सका। जिसके रक्षक स्वयं भगवान है उसको इस संसार में कोई भी मार नहीं सकता। इस दृष्टांत से यह भी ज्ञात होता है कि भक्त प्रह्लाद का ईश्वर में पूर्ण भरोसा था और उनका यही भरोसा ईश्वर को साकार रूप में प्रकट करके हिरणाकश्यप का वध करा दिया। हिरणाकश्यप नास्तिक था।

महाभारत में भी इसी प्रकार का दृष्टांत हमें मिलता है। भरी सभा में दुर्योधन ने जब द्रौपदी का अपमान किया और अपने भाई दुस्साशन से द्रौपदी का चीरहरण करवाया तो उस समय द्रौपदी असहाय होकर भगवान श्रीकृष्ण की शरण में गयी। भगवन श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की साड़ी को इतना बड़ा कर दिया कि हजारो हाथियों की शक्ति रखनेवाला दुस्साशन हार मानकरके गिर गया लेकिन द्रौपदी को सभा में नग्न न कर सका, क्योंकि द्रौपदी की रक्षा स्वयं भगवान कर

रहे थे। द्रौपदी को पूर्ण विश्वास था जब आदमी निःसहाय होकर ईश्वर की शरण में जाता है तो निश्चित ही ईश्वर उसकी पुकार को सुनते है और उसकी रक्षा करते है। इसी प्रकार का उदाहरण गज–ग्राह का भी है। जब तक हाथी को अपनी शक्ति पर विश्वास था तब तक वह अपना पूरा जोर पानी से निकलने के लिए लगाया। किन्तु जब उसने यह देख लिया कि शक्ति काम नहीं आ रही है तब वह असहाय होकर ईश्वर की शरण में गया और ईश्वर ने उसकी जान बचाई। इससे यह सिद्ध होता है कि आदमी को जब तक अपनी शक्ति पर भरोसा है, आदमी में अहंकार है तब तक ईश्वर उसकी सहायता नहीं करते। किन्तु जब आदमी निरहंकार होकर ईश्वर की शरण में जाता है तो ईश्वर उसको अपनी शरण में लेकर उसकी रक्षा करते है। इससे यह ज्ञात होता है कि अहंकार आदमी का सबसे बड़ा शत्रु है और ईश्वर सबसे बड़ा न्यायकर्त्ता है।